उपसंहार

उपसंहार :

मन्नूजी को कहानी लेखिका के रूप में ही सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई है। उन्होंने नयी कहानीकारों में विशिष्ट स्थान पा लिया है। साहित्य-जगत् में उनका आगमन कहानी-पत्रिका में प्रकाशित `मैं हार गई` कहानी से हुआ। मन्नूजीने पाँच कहानी संग्रहों का सृजन किया। अब तक उन्होंने पच्चास कहानियाँ लिखी हैं। इसके साथ-साथ उन्होंने पाँच उपन्यास तथा दो नाटकों का भी सृजन किया है। इस प्रकार हिंदी कथा-साहित्य में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।

मन्नूजी ने पारिवारिक और सामाजिक परिवेश में नारी मन की टूटन एवं घुटन, पुरुष के मन में उठनेवाले संदेह स्वम् ईर्ष्याभावना आदि को अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनकी कहानियों में विषय

DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

वैचित्र्यता दिखायी देती हैं। उनकी भाषाशैली सीधी-सादी एवम् सरल है। भाषा की सुंदरता, सुबध्दता एवं सहजता मन्नूजी की कहानियों को लोकप्रियता प्रदान करती हैं। मन्नूजीकी संवाद योजना स्वाभाविक सजीव एवम् पात्रानुकूल है। उनके पात्र रोजमर्रा का जीवन यापन करनेवाले हैं। उनकी प्रत्येक कहानी का आरंभ और अंत दोनों ही आकर्षक और प्रभावपूर्ण हैं तथा शीर्षक छोटे, घटनासे सामंजस्य रखनेवाले हैं। उनमें नवीनता दिखायी देती है।

मन्नूजीने प्रमुखत: मध्यवर्गीय समाज का चित्र अंकित करने के हेतु कहानियों का सृजन किया है। उन्होंने विशेषत: पति-पत्नी संबंध एवम् वैयक्तिक समस्याओं परही विशेष बल दिया है। इस प्रकार उन्होंने पात्रों द्वारा समस्याओं को उठाया है न कि उन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। उपन्यास की अपेक्षा कहानी का पटल तुलनात्मकदृष्टया छोटा होता है। चरित्र-चित्रण का उद्देश्य ही लेखिका के विचारों की दिशा होती है। जहाँ कहीं पात्र अपनी तार्किकता का अथवा विचारधारा का परिचय देता रहता है, वहाँ लेखिका अपना मत प्रस्तुत करने का प्रयत्न करती है। मन्नूजीने स्त्री पात्रों के साथ-साथ पुरुष पात्रोंका चित्रण अत्यंत सूक्ष्मतासे किया है। समाज में उन्होंने जो देखा, अनुभव किया उसी के आधार पर अपनी प्रतिभा के सहारे कहानियों में सशक्त पात्र प्रस्तुत किये। अधिकत: पुरुष पात्रों का सही एवम् यथार्थ अंकन किया है। उन पात्रों में जीवन के पथ पर निश्चित एवम् ठोस ध्येयप्रत पहुँचनेवाले पात्र का चित्रण अपेक्षत: कम हुआ है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्हें पात्रों के द्वारा समाज का यथास्थित रूप खड़ा करना हो। जिसमें मन्नूजी का लेखक रूप काफी हद तक सफल हुआ है। वे अपनी कहानियों में बगैर किसी दार्शनिक अंदाज के बड़े-से-बड़े दर्शन की बात पूरी सहजतासे कह जाती है। जिंदगी के सच को अनावृत्त करके साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करती है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

कथाकार मन्नूजी पात्रों के बहिर्जगत की अपेक्षा अंतर्जगत का दर्शन करती है। उन्होंने अधिकतर अंतर्द्वन्द्वोंको ही प्राधान्यता दी है। परिणाम-स्वरूप पुरूष पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण उनकी कहानियों में प्रस्तुत हुआ है। उनके कहानियों के प्रमुख पुरूष पात्र व्यक्तिगत उलझनों में उलझे हुये हैं। इसी उधेड़-बुन में वे अपना जीवन व्यतित करते हैं। उनकी आत्मपीड़ा ही उन्हें अंतर्मुखी बना देती है। यह पात्र प्रमुखत: पारिवारिक, सामाजिक तथा यौन समस्याओं से त्रस्त दिखायी देते हैं। पति-पत्नी के आत्मीय संबंधों में तथा विश्वास में दरार पड़ने से पारिवारिक समस्याएँ खड़ी होती हैं। दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे को समझने की क्षमता का अभाव ही उनके दु:ख का कारण बनता है। सामाजिक समस्याओं का मूल आधार आर्थिक प्रवंचना रहा है। इसी कारण पति के अकार्यक्षम होने पर पत्नी की जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती है। नारी शिक्षित होने पर अपना भार खुद उठाने में समर्थ होती है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति-स्वतंत्रता की बात जोर पकड़ने के कारण नारी पुरूष की अपेक्षा मुक्त हो गयी है। इसका परिणाम परिवार पर, समाज पर हुआ है।

भारतीय समाज में यौन-समस्या का प्रादुर्भाव नारी-मुक्ति आंदोलन के फलस्वरूप हुआ है। पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था को आज की नारी नकार रही है। उपजीविका के साधनों की पूर्ति के लिए पुरूष के साथ-साथ नारी का योगदान अहम बन गया है। विवाहित पुरूष की व्यभिचारिता को समाज मान्यता देता है, तो एक विवाहित नारी का परपुरूषसे शरीर संबंध को अमान्यता के कारण यौन समस्या उठ खड़ी होती है। इसका सही उत्तर देने में भारतीय संस्कृति नाकामियाब है।

मन्नू भंडारीजी की कहानियों में अधिकांश पुरूष पात्र अकर्मण्य तथा व्यक्तिगत कुंठाओं से ग्रस्त होने के कारण पलायनवादी है। इनमें `बंद दराजों का साथ` का विपिन विवाहित होने पर अन्य स्त्री से संबंध स्थापित

कर उसके गर्भवती होने पर मुख मोड़कर पलायन करता है। ` कील और कसक ` का शेखर भी विवाहिता नारी से अतिरिक्त लगाव दिखाकर दुसरी स्त्री से विवाह करता है। ` नशा ` कहानी का शंकर स्वयं तो शराबी है जो पत्नी के टुकड़ों पर पलकर अकर्मण्य बन गया है। ` आते-जाते यायावर ` का नरेन अकर्मण्यता के कारण किसी भी स्त्री से जुड़कर नहीं रहता। ये पात्र प्राय: जीवन की समस्याओं के प्रति उदासीन बन गये हैं।

मन्नूजी के कुछ पुरुष पात्र आत्मकेंद्रित स्वम् संकीर्ण मनोवृत्तिवाले हैं। ये पात्र कुंठित अहं के कारण अपनी स्वार्थ-सिध्दि के लिए कुछ भी कर सकते हैं। इनमें ` श्मशान ` का युवक एक ऐसा पात्र है जो अपनी स्वार्थ-सिध्दि के लिए जीने की नयी-नयी परिभाषाओं का निर्माण करता है। वह तीन विवाह करता है। हर पत्नी के मृत्यु के पश्चात् सब कुछ खोने का आभास निर्माण करता रहता है। ` पंडित गजाधर शास्त्री ` का पंडित गजाधर शास्त्रीजी हमेशा अपनी आत्म-प्रशंसा में लीन रहता है। अपने आप पर महान साहित्यकार का खोल पहनकर भीतर से खोखला बनता जाता है। ` नई नौकरी ` का कुंदन अपनी आत्मकेंद्रित वृत्ति के कारण पत्नी का व्यक्तित्व पूरी तरह मिटा देता है।

इनकी कहानियों में एक पात्र इस प्रकार का है जो संकीर्ण मनोवृत्तिवाला नहीं है। ` ऊँचाई ` का शिशिर, पत्नी का दुराचारिणी होने पर भी एक समझौतावादी पती के रूप में आया है। जो पत्नी के एक ही स्निग्ध उद्गार से तरल होकर उसकी बड़ी-से-बड़ी गलती को माफ करता है। पर उसके चरित्र की एक विशेषता यह है कि वह अन्य स्त्री की ओर आसक्त नहीं होता। पति-पत्नी के पवित्र संबंधो पर विश्वास रखता है।

मन्नूजी की कहानियों के कुछ पुरुष पात्र अत्यंत हीन मनोवृत्ति-वाले हैं। जिनका चारित्रिक पतन हो चुका है। वे एक ही नहीं अपितु अनेक स्त्रियों के साथ निर्दयतापूर्वक आचरण करते हैं। इनमें ` स्त्री-सुबोधिनी ` का शिंदे बॉस, ` अभिनेता ` का दिलीप, ` आते-जाते यायावर ` का नरेश, ` गीत का चुंबन ` का निखिल ` एक बार और ` का कुंज प्रमुख हैं। ऐसे पात्रों में अहं स्वम् जिज्ञासुवृत्ति का प्राधान्य है। इनका आचरण सामाजिक परिस्थितियों के प्रतिकूल दिखायी देता है।

मन्नूजी के व्यक्तिप्रधान पात्र अपना अलग-अलग व्यक्तित्व धारण किये हुये हैं। वे असाधारण परिस्थितियों में पड़े रहने से प्राय: द्वंद्वग्रस्त है। ` गीत का चुंबन ` कहानी का निखिल अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण हर स्त्री को मोहित करता रहता है। ` एक कमजोर लड़की की कहानी ` का ललित विदेश से लौटने के कारण वहाँ के परिवेश के प्रभाव के कारण स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह रखता है। इसी कारण उसे यहाँ के परिवेश से ताल-मेल बिठाना मुश्किल हो जाता है। ` हार ` का शेखर पत्नी के कारण उद्भुत परिस्थितिमें अपने असाधारण वाक्चातुर्यद्वारा मात कर देता है। ` तीसरा हिस्सा ` कहानी के शेराबाबू एक ऐसे व्यक्ति हैं जो स्वयं ही ` पत्रिका ` बंद होने पर अपने उसूलोंपर दृढ़ रहते हैं। एक साधनहीन व्यक्ति जब उसूलों का पक्का होता है तब समाज देर से क्यों न हो उसे स्वीकार करता है। ऐसे असाधारण व्यक्ति जीवन की सफलता के लिए उसूलों को ताक पर रखने की आवश्यकता नहीं समझाता। इसके लिए आवश्यकता होती है दृढ़ संकल्प, संयम और इंतजार की। इसी इंतजार में शेराबाबू द्वंद्व ग्रस्त रहते हैं। कुछ पुरुष पात्र आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण द्वंद्वग्रस्त रहते हैं। इनमें ` दाय ` कहानी के कुंती के पिता और ` इन्कमटैक्स और नींद ` के डॉ. दयाल आते हैं।

मन्नूजी की कहानियों में सतीश (तीसरा आदमी) जैसा पात्र मनोग्रंथियों से ग्रस्त होने के कारण द्वंद्वग्रस्त रहता है। इस पात्र में पत्नी को समझाने की असमर्थता के कारण आत्महीनता की भावना उत्पन्न हो गयी है। इसीलिए समस्या का समाधान खोजने के लिए उसके अंतर्मन में विभिन्न विचार उद्दिप्त होते रहते हैं। उन्हें सुलझाने में तथा बाहाभिव्यक्ति न करके अपनी मन:स्थिति को और अधिक द्वंद्वपूर्ण बना देता है तथा दु:खी होता है।

इन पुरूष पात्रों के अलावा लेखिकाने कुछ पात्रों को परिवार के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। ये पात्र पारिवारिक समस्याओं के बीच अपने आप को टूटता हुआ महसूस करते हैं। ज्यादह तर पात्र परिवार प्रमुख हैं। `सजा` कहानी के आशा के पापा ऐसे पुरूषों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो निर्दोष होने पर भी दोषी हैं। न्याय-व्यवस्था उन्हें कटघरे में खड़ा करके मुजरिम करार देती है। इसकी अंतहिन यातना उन्हें तथा परिवालों को भुगतनी पड़ती है। `रेत की दीवार` के बाबूजी अपने बेटे की शिक्षा द्वारा भविष्य का महल खड़ा करना चाहते हैं। उनके दृढ़ निश्चय पर परिवार के अन्य सदस्य आर्थिक अभाव में पीसते जाते हैं। `दाय` कहानी के कुंती के पिता परिवेश से संत्रस्थ होने के कारण अपने बच्चों के लिए कुछ कर नहीं पाते। इसका उन्हें दु:ख सालता रहता है। `शायद` कहानी का राकाल परिवार में रहकर अलगाव महसूस करता है। क्योंकि अर्थाजन के हेतु वह अपने परिवार से दूर रहकर काम करता है जिसके परिणामस्वरूप पारिवारिक समस्याओं से अंजान रहता है।

मन्नूजी की कहानियों में कुछ पात्र युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी अपनी समस्यायें हैं, व्यथाएँ हैं। कुछ भावुक है तो कुछ यथार्थ हैं। `रेत की दीवार` का रवि बेरोजगारी समस्या से त्रस्त है, युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेमी तथा भावुक युवा पात्र तथा अधिकार भाव से

प्रेरित युवा पति पात्र आते हैं। इनमें ' यही सच है ' के निशिथ और संजय, ' एक बार और ' का नंदन, ' ऊँचाई ' का अतुल, ' तीन निगाहों की एक तस्वीर ' का हरीश, ' अनथाही गहराईयाँ ' का शिवनाथ, ' कील और कसक ' के कैलाश और शेखर प्रमुख हैं।

मन्नूजी की कहानियों के अधिकांश पुरुष पात्र बहिर्मुखी (जिसका मन बाहरी विषयों मे उलझा हो, विमुख) न होकर अन्तर्मुखी (भीतर की ओर जानेवाला) अधिक हैं। वे सभी मध्यमवर्ग से जुड़े हुए है। जीवन की विभिन्न समस्याओं, संघर्षों और अंतर्द्वन्द्वों के कारण वे सामाजिक पात्र न बनकर व्यक्तिवादी हो गए हैं। उनकी कहानियों में काम-अतृप्ति पीड़ित पात्र, मनोग्रंथियो से ग्रस्त पात्र, खलनायकी अंदाज के पात्र, मनो-विश्लेषणात्मक पात्र, मानसिक और चारित्रिक दृष्टि के पुरुष पात्रों का चित्रण मिलता है। कुछ पात्र मानसिक विकृतियों, कुंठाओं, असामाजिक कृत्यों से घिरे रहते हैं अथवा चारित्रिक एवं मानसिक विकृतियों के कारण जिनका पूर्णत: पतन हो गया है। उनकी कहानियों में परिवार, यौन, संस्कृति, समाज आदि को लेकर पात्रों मे अंतर्द्वन्द्व होता रहता है। पति-पत्नी का पारस्परिक मन-मुटाव, अनैतिक संबंधो के कारण संघर्ष का धरातल पैदा हो गया है। आज व्यक्तिस्वातंत्र्य के नाम पर मनमानी चल रही है। एक प्रकार की अराजकता जीवन में तांडव कर रही है। इससे जीवन में अशांति और अतृप्ति सिर उठाये जीवन को जर्जर बना रही है। इसी परिस्थिति के कारण पुरुष पात्रों का सफल चित्रण मन्नूजी ने अपनी कहानियों में किया है।

जीवन में समन्वय और संघर्ष दोनों की भूमिकायें एक-दूसरे से गुँथी हुई और परिस्थितियों से बँधी होती है। आधुनिक युग में साधारण और सामाजिक मनोविज्ञानों का प्रयोग समन्वय द्वारा सामाजिक चरित्र-निर्माण के

लिए किया जाता है। मन्नूजी की कहानियों में प्रमुखत: वृध्द (पि का प्रतिनिधित्व करनेवाले) पात्र, प्रेमी, युवा, पति पात्र आते हैं। उन्होंने ज्यादहतर संकीर्ण मनोवृत्तिवाले तथा रूढ़िवादी विचारों का समर्थन करनेवाले पात्रों का ही अंकन किया है। निस्वार्थ या जीवन में उदात्त ध्येय या आदर्श लेकर चलनेवाले पात्रों का अपेक्षातथा कम चित्रण हुआ है। इसका एक और प्रबल कारण यही भी रहा है कि आधुनिक युग का माहौल। जो भीतर से खोखला बनता जा रहा है, जहाँ रिश्ते-नातों की पवित्र संबंधो की कोई कद्र नहीं रही है और जो ऊपरी दिखावट में रहना पसंद कर रहा है।

प्रस्तुत प्रबंध के आरंभ में कुछ प्रश्न उठ खड़े हुये थे उनके निष्कर्ष निम्नानुसार निकाले हैं।

१) मन्नू भंडारीजी के कहानियों में प्रमुखता: दो प्रकार के पात्र दिखायी देते है - १. वर्गगत पात्र, २. व्यक्तित्वप्रधान पात्र। वर्गगत पात्र जो विशिष्ट वर्ग या जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अंतर्गत पिता वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले, आत्मकेंद्रित पुरूषों का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र तथा पारिवारिक कोटि के पुरूष पात्र आते हैं। ये पात्र विशिष्ट विचारधारा का प्रतिनिधित्व करनेवाले हैं। व्यक्तित्व प्रधान पात्र अपनी अलग-अलग विशेषता लिये हुये आते हैं। इनमें युवा पात्र, प्रेमी पात्र, तथा अधिकार भावसे प्रेरित मध्यमवर्गीय पति पात्र आते हैं।

२) मन्नूजी की कहानियों के पुरूष पात्रों का नारी विषयक दृष्टिकोण स्थूलमान से दो प्रकार रहा हैं। एक परंपरावादी दृष्टिकोण और दूसरा आधुनिक। परंपरावादी पात्रों का दृष्टिकोण नारी स्वातंत्र्य के खिलाफ तो आधुनिक दृष्टिकोण नारी स्वतंत्रता के पक्ष में है। आधुनिक दृष्टिकोण लेकर चलनेवाले पुरूष पात्र सतही तौर पर नारी स्वतंत्रता चाहते हैं किंतु मूलत: उनका नारी के प्रति दृष्टिकोण संकीर्ण रहा है।

३) मन्नूजी ने पुरूष पात्रों का चित्रण मनोविश्लेषणात्मक एवम् अंतर्द्वंद्वात्मक किया है। ये संख्या में कम हैं फिरभी अपनी विशेषता लिये हुये हैं। परंपरा के पोषक पात्रों के व्यक्तित्व में रूढ़िबध्दता होने के कारण स्वार्थी, संकीर्ण मनोवृत्ति आदि विशेषता दिखायी देती है। रूढ़िविरोधी विद्रोही पात्र रूढ़ियों का पालन न करते हुए उसका विरोध करते हैं। फलत: उनमें विद्रोही भावना प्रखर है। पत्नी-भीरू पात्र पत्नी के प्रति आसक्त होने के कारण दयनीय एवं दारोमनीय बन गये हैं। ये सुखद परिवार का भ्रम बनाये रखते हैं। भोगवादी सुविधाभोगी पात्र सुख ऐश्वर्य में जीना चाहते हैं। प्राय: इनमें असमर्थता एवम् दुर्बलता दिखायी देती है। यथार्थ पात्र चरित्र भ्रष्ट, दुर्बल, विलासी, पाखंडी चरित्रहीन, विश्वासघाती हैं। रोमानी पात्रों की विशेषता यह है कि उनका व्यवहार आडंबर पूर्ण है। नैतिक पतन, व्यवहार में विकृतियाँ, संकीर्णता आत्मकेंद्रित पात्रों की विशेषता है। सामाजिक पात्रों में मानवीय दुर्बलता की गुण तथा प्रवृत्तियाँ दिखायी देती है। सामाजिक पात्र समस्याओं से ग्रस्त हैं। युवा पात्रों में पति एवम् प्रेमी होने के कारण स्वप्नील भावना उनके व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता रही है। मनोग्रंथियों से ग्रस्त पात्र में नारी के प्रति विकृत भावना और रूप-लिप्सा प्रमुख हैं।

४) लेखिकाने पुरूष पात्रों की आत्मकेंद्रित एवम् संकीर्ण मनोभावना को अभिव्यक्ति दी है। उनका दृष्टिकोण पुरूष के प्रति यथार्थवादी रहा है। आम आदमी के रूप का लेखिका ने समर्थन करते हुए उनकी तमाम कमजोरियाँ तथा शक्तियों को अभिव्यक्ति दी हैं। मध्यमवर्गीय परिवेश से त्रस्त पुरूषपात्रों के पक्ष में लेखिका रही है। पुरूष पात्रों के बहाने मन्नूजी के स्त्री-पुरूष संबंधी विचारों का परिचय मिलता है। पुरूष पात्रों के चित्रण के माध्यम से परंपरा प्रिय एवम् आधुनिक युग की चुनौतियों का लेखा-जोखा लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत विवेचन के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मन्नूजी की कहानियों में प्रमुख पुरुष पात्रों की विविध प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं ।